अनुक्रमणिका

सूची		पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	2
2.	समर्पण	3
3.	मरूसार	4
4.	मरुमेरु की निदिध्यासना वृत्ति	5
5.	प्राक्कथन	6

अध्याय	अध्याय का नाम	पद्य संख्या	पृष्ठ संख्या
प्रथम	अतिक्रमण	49	21–27
द्वितीय	अमित्र चरित्र	42	28–33
तृतीय	सन्देश	66	34–43
चतुर्थ	उत्तर	83	44–54
पंचम	चिन्तन	109	55–69
षष्ठ	आह्वान	68	70–79
		417	

कवि परिचय 80–85

मंगलाचरण

विश्वनाथ खोलें नयन, लें द्रुत अरिअहि नाथ ।
महाकाल बन जगत को, फिर से करें सनाथ ।। 1

विषपायी निज रूप तज, प्रकटें भीम अघोर ।
नव अन्धकवध हो त्रिपुर, जलें शत्रु के घोर ।। 2

विषमनयनता रूद्र की, हो अब अनुकरणीय ।
अरिक्षय से क्षितिहीन हो, क्षिति विलसे महनीय ।। 3

आशु शूलधर हर हरें, भरत भूमि के शूल ।
जन के विषम त्रिशूल को, आशुतोष आमूल ।। 4

पूर्ण प्रथम ही कर दिए, इस अपात्र के कार्य ।
बस कृतज्ञता ज्ञप्ति ही, अब मुझको व्यवहार्य ।। 5

अनुभव कर भव कृपा का, संभव क्या भवभीति ।
करना कृपा अहेतुकी, बस भवदीया रीति ।। 6

सकल सत्व संसार के, शिव के सदा कुमार ।
वृथा मूढ़ में जताता, संज्ञा पर अधिकार ।। 7